









# नवरात्रों में आकर्षण का केन्द्र कात्यायिनी मंदिर

भारत की राजधानी दिल्ली में स्थित है आद्या कात्यायिनी मंदिर जो छतरपुर मंदिर के नाम से भी प्रसिद्ध है। छतरपुर मंदिर दिल्ली का प्रसिद्ध धार्मिक स्थल है जिसे देखने के लिए दूर-दूर से लोग यहां आते हैं तथा माता के दर्शन एवं आशीर्वाद प्राप्त करने की इच्छा रखते हैं। छतरपुर मंदिर दिल्ली के बड़े और भव्य मंदिरों में से एक है।



**वि**

शाल क्षेत्र में फैला यह मंदिर अपनी प्रसिद्धि के कारण सभी के आकर्षण का प्रमुख केन्द्र रहा है। आद्या कात्यायिनी मंदिर जो छतरपुर मंदिर देवी दुर्गा को समर्पित है जिसमें माता के भव्य रूप के दर्शन होते हैं। इस विशाल मंदिर में भगवान विष्णु, शिव, गणेश, हनुमान तथा भगवान राम सीता इत्यादि अन्य देवी-देवताओं के मंदिर भी स्थित हैं।

#### छतरपुर मंदिर स्थापना

छतरपुर मंदिर विशालता एवं भव्यता का अद्भुत संगम है। यहां पर आने वाला प्रत्येक व्यक्ति मां की महिमा का गुणगान करता है। गुडगांव महारौली मार्ग के समीप छतरपुर नामक जगह में स्थित है यह मंदिर।

इस महत्वपूर्ण मंदिर की स्थापना का श्रेय मां के परम भक्त संत नागपाल जी को जाता है उनके प्रयासों द्वारा मंदिर का निर्माण हो सका और बाबा संत नागपाल जी की मृत्यु के पश्चात उनकी समाधी भी इसी पवित्र स्थल पर ही बनवाई गई।

लगभग बीस छोटे-बड़े मंदिरों का यह स्थल दिल्ली में दूसरा सबसे बड़ा मंदिर माना जाता है।

#### आद्या कात्यायिनी मंदिर, छतरपुर मंदिर स्थापत्य

भारत वर्ष की राजधानी दिल्ली का छतरपुर मंदिर विश्वप्रसिद्ध मंदिर है यह पवित्र स्थल अपनी निर्माण कला के लिए भी विख्यात है। मंदिर कि निर्माण कला में सफेद संगमरमर द्वारा निर्मित शिल्प कला एवं नक्काशी के बेहतरीन नमूनों को देखा जा सकता है। संगमरमर से बनी जाली देखने में बहुत ही खूबसूरत प्रतीत होती है।

मंदिर के परिसर में बहुत बड़ा दरवाजा लगा देख सकते हैं जिस पर एक बड़ा सा ताला लगा हुआ है यह सभी के आकर्षण का केन्द्र होता है। दक्षिण भारतीय शैली में निर्मित यह छतरपुर मंदिर खूबसूरत बगीचों से घिरा हुआ है। मंदिर के परिसर में धर्मशाला, डिस्पेंसरी और स्कूल का संचालन भी होता है।

#### आद्या कात्यायिनी मंदिर महत्व

छतरपुर मंदिर माँ दुर्गा के छोटे स्वरूप आद्या कात्यायनी का स्थल है। देवी कात्यायनी के साथ के पौराणिक कथा जुड़ी है जिसके अनुसार प्रसिद्ध महर्षि कात्यायन ने माँ भगवती की कठोर उपासना कि इस तपस्या से प्रसन्न हो देवी ने उनके घर पुत्री रूप में जन्म लिया तभी माँ कात्यायनी कहलाई और देवी ने राक्षस महिषासुर का वध किया था। मान्यता अनुसार महर्षि कात्यायन के घर में आश्विन कृष्ण चतुर्दशी को उत्पन्न हुई थीं तथा सप्तमी, अष्टमी तथा नवमी तक तीन दिन तक देवी ने कात्यायन ऋषी की पूजा स्वीकार की ओर दशमी को महिषासुर का वध करके पृथ्वी को आतंक से मुक्त किया।

मंदिर में आने वाला हर भक्त मां की भक्ति से पूर्ण होता है। माँ कात्यायनी का स्वरूप अत्यंत ओजमयी है सिंह पर विराजमान माता शक्ति का स्वरूप है। माँ की भक्ति द्वारा मनुष्य को धर्म, अर्थ, काम तथा मोक्ष फलों की प्राप्ति होती है। माँ कात्यायनी की भक्ति प्राप्त करने के लिए भक्त को इस मंत्र का जाप करना चाहिए

या देवी सर्वभूतेषु माँ कात्यायनी रूपेण संस्थिता।  
नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः

#### छतरपुर मंदिर उत्सव

मंदिर में वैसे तो वर्षभर लोगों का आना जाना लगा ही रहता है परंतु नवरात्रि के पर्व के समय इस मंदिर की रौनक देखते ही बनती लाखों की तादाद में लोग मां के दर्शन करने के आते हैं। दूर-दूर से लोग बसों, कारों आदि में भारी संख्या में इस मंदिर में पहुंचते हैं। कई लोग नंगी पाँव पैदल ही माता के दर्शनों के लिए छतरपुर मंदिर में आते हैं।

मंदिर में जागरण, कीर्तन इत्यादि का इंतजाम किया जाता है। दुर्गा पूजा के उत्सव पर देश भर से भक्तगण यहां एकत्रित होते हैं तथा उत्साह के साथ इन आयोजनों में भाग लेते हैं। मंदिर में एक पुराना पेड़ है जिसकी लोगों में विशेष श्रद्धा है। लोग इस वृक्ष पर लाल धागा एवं रंग-बिरंगी चूड़ियां बांधते हैं श्रद्धालुओं का विश्वास है कि ऐसा करने से सभी मनोकामना पूर्ण होती है तथा मां का आशीर्वाद प्राप्त होता है।



# तांत्रिकों की देवी माँ बगलामुखी



**हमें बगलामुखी सर्व दुष्टानां वाचं मुखं पदं  
स्तम्भय जिह्वां कीलम बुद्धिं विनाशय हमीं ?  
स्वाहा।**

प्राचीन तंत्र ग्रंथों में दस महाविद्याओं का उल्लेख मिलता है। उनमें से एक है बगलामुखी। माँ भगवती बगलामुखी का महत्व समस्त देवियों में सबसे विशिष्ट है। विश्व में इनके सिर्फ तीन ही महत्वपूर्ण प्राचीन मंदिर हैं, जिन्हें सिद्धपीठ कहा जाता है। उनमें से एक है नलखेड़ा में। तो आइए धर्मयात्रा में इस बार हम आपको ले चलते हैं माँ बगलामुखी के मंदिर।

भारत में माँ बगलामुखी के तीन ही प्रमुख ऐतिहासिक मंदिर माने गए हैं जो क्रमशः दतिया (मध्यप्रदेश), कांगड़ा (हिमाचल) तथा नलखेड़ा जिला शाजापुर (मध्यप्रदेश) में हैं। तीनों का अपना अलग-अलग महत्व है।

मध्यप्रदेश में तीन मुखों वाली त्रिशक्ति माता बगलामुखी का यह मंदिर शाजापुर तहसील



नलखेड़ा में लखुंदर नदी के किनारे स्थित है। द्वार युगीन यह मंदिर अत्यंत चमत्कारिक है। यहाँ देशभर से शैव और शाक्त मार्गी साधु-संत तांत्रिक अनुष्ठान के लिए आते रहते हैं।

इस मंदिर में माता बगलामुखी के अतिरिक्त माता लक्ष्मी, कृष्ण, हनुमान, भैरव तथा सरस्वती भी विराजमान हैं। इस मंदिर की स्थापना महाभारत में विजय पाने के लिए भगवान कृष्ण के निर्देश पर महाराजा युधिष्ठिर ने की थी। मान्यता यह भी है कि यहाँ की बगलामुखी प्रतिमा स्वयंभू है।

यह बहुत ही प्राचीन मंदिर है। यहाँ के पुजारी अपनी दसवीं पीढ़ी से पूजा-पाठ करते आए हैं। 1815 में इस मंदिर का जीर्णोद्धार किया गया था।

इस मंदिर में लोग अपनी मनोकामना पूरी करने या किसी भी क्षेत्र में विजय प्राप्त करने के लिए यज्ञ, हवन या पूजन-पाठ कराते हैं।

यह मंदिर श्मशान क्षेत्र में स्थित है। बगलामुखी माता मूलतः तंत्र की देवी हैं, इसलिए यहाँ पर तांत्रिक अनुष्ठानों का महत्व अधिक है। यह मंदिर इसलिए महत्व रखता है, क्योंकि यहाँ की मूर्ति स्वयंभू और जाग्रत है तथा इस मंदिर की स्थापना स्वयं महाराज युधिष्ठिर ने की थी।

इस मंदिर में बिल्वपत्र, चंपा, सफेद आँकड़ा, आँवला, नीम एवं पीपल के वृक्ष एक साथ स्थित हैं। इसके आसपास सुंदर और हरा-भरा बगीचा देखते ही बनता है। नवरात्रि में यहाँ पर भक्तों का हजूम लगा रहता है।

मंदिर श्मशान क्षेत्र में होने के कारण वर्षभर यहाँ पर कम ही लोग आते हैं।

#### कैसे पहुँचें-

**वायु मार्ग-** नलखेड़ा के बगलामुखी मंदिर स्थल के सबसे निकटतम इंदौर का एयरपोर्ट है।

**रेल मार्ग-** रेल द्वारा इंदौर से 30 किमी पर स्थित देवास या लगभग 60 किमी मक्सूी पहुँचकर भी शाजापुर जिले के गाँव नलखेड़ा पहुँच सकते हैं।

**सड़क मार्ग-** इंदौर से लगभग 165 किमी की दूरी पर स्थित नलखेड़ा पहुँचने के लिए देवास या उज्जैन के रास्ते से जाने के लिए बस और टैक्सी उपलब्ध हैं।







